डॉ.पूरन सिंह

प्यार तो समर्पण चाहता है, बाबू

बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन का काम जोरों पर था। मशीनों, कंकरीट, सीमेंट, सरिया से जुझ रहे मजदूर, पेट के लिए लड़ रहे थे जिनमें स्त्री पुरूष सभी थे। तभी वहां एक डिजायर आकार रूकी। उसमें से सुन्दर से युवक और युवती उतरे और गाड़ी की साइड में खड़े होकर एक दूसरे की जीभ चाटने लगे।

काम कर रहे मजदूरों में से एक मजदूर ने उन्हें देखा और मुस्कराया फिर अपने काम कम पर लग गया। युवक और युवती ने उसे मुस्कराते हुए देखा तो गुस्सा होने लगे और उस मजदूर को अपने पास बुलाकर कहा, 'सुनो तुम इधर आओ।'

मजदूर सिर पर तसला रखे था उसमें गारा था जिसे काम रहे मिस्त्री को देने के पश्चात उनके पास आया, 'जी मालिक।'

'मालिक के बच्चे हम लोग प्यार कर रहे थे तो तू हमें देखकर मुस्कराया क्यों था। मजाक बना रहा था हम दोनों की।' युवक गुर्राया था।

'नहीं, बाबू साहब ऐसा तो नहीं था।' मजदूर ने सहज भाव से कहा।

'तो कैसा था।' युवक फिर गुर्राया।

'बस ये कहना चाह रहा था कि प्यार दिखावा थोड़े ही होता है। आप जो कर रहे थे वह प्यार थोड़े ही था, साहब।' मजदूर बोला था।

'अच्छा तो क्या होता हैं प्यार। साले तुम दो कौड़ी के मजदूर मुझे प्यार करना सिखाओगे।' आपे से बाहर हो गया था युवक। उसके साथ खड़ी युवती उसे रोकने लगी।

'साहब प्यार दो कौड़ी और चार कौड़ी का मोहताज थोड़े ही होता है। प्यार तो बस प्यार होता है।' मजदूर ने दर्शन बघारा।

युवक लगभग बिखर पड़ा और युवती को एक तरफ झटककर उसके पास आ गया और वह मजदूर की बनियान पकड़कर लगभग मारने वाले अंदाज में था। उसे ऐसा करते देख शेष मजदूर और मजदूरिनें भी इकट्ठी हो गई और उस युवक पर खिसियाने लगे। युवक थोड़ा शांत हुआ तो फिर पूछने लगा, 'अच्छा चल अब तू बता, प्यार क्या होता है। बता.....बता तो सही।' अब दूर खड़ी युवती भी उसके पास थी।

'तो सुनो बाबू साहब।' मजदूर बोला था, 'इन्हें...इन्हें देख रहे हो।' मजदूर ने लगभग चीथड़ा-चीथड़ा हुई साड़ी पहने मजदूरिन की ओर इशारा किया था, 'ये.....ये.....।' अब मजदूरिन मजदूर के बिल्कुल पास आ गई थी, 'इनके पिता बहुत रहीस हैं। समाज में ऊंची जाति से हैं। पैसे के ढेर में रही हैं ये। मैं इनके यहां नौकर था। खूब जवान था तब। बस इनसे, मुझे न जाने कब प्यार हो गया। बाद में पता चला कि ये तो मुझसे दोगुना ज्यादा प्यार करती हैं मुझे। मैंने इन्हें ऊंच नीच भी समझाया। नहीं मानी ये। खूब पढ़ी लिखी हैं। इनके पिता ने कहा भी इनसे। समझाया भी। नहीं मानी। बस हम दोनों ने छोड़ दिया इनके पिता का घर। मेरे पास कुछ था भी नहीं। ये चाहती तो घर से धन दौलत ला सकती थी। लेकिन नहीं लायी।

हम तो मजदूर हैं साहब, मजदूरी ही जानते है। वहीं करने लगे। उसी में गुजरा होने लगा।' मजदूर लगभग रूआँसा होने लगा था। उसकी मजदूरिन उसे ढाढस बंधाने लगी। और उस युवक और युवती को घृणा से देखने लगी थी। 'मेरे हर दुख-सुख की साथी मेरी ये.....मेरे साथ ही काम करने लगी। शुरू-शुरू में परेशानी भी हुई इन्हें फिर.....फिर अब मेरे साथ है। कभी मुझे नीचा नहीं देखने दिया। अच्छी नौकरी कर सकती थी। फिर दूर रहना पड़ता। कहती है तुमसे दूर पल भर नही रह सकती।' फिर उस युवक के ठीक सामने होकर बोला था, 'साहब आप दोनों कर रहे थे शायद वह ठीक हो लेकिन हमारा प्यार.....हमारा प्यार कम नहीं है आपसे। बाकी आप जानें। अगर कुछ गलत कहा हो तो मांफ कर देना।'

थोड़ी देर के लिए चारों ओर शांति छा गई फिर युवती उस मजदूरिन के पास आयी और बोली, 'दीदी आप बहुत धनवान है। जो आपको प्यार करने वाला ऐसा इंसान मिला।' इतना कहकर उसकी आंखों में आंसू छलकने लगे।

बहुत देर से चुप खड़ी मजदूरिन ने पूछा, 'ऐसा न कहो। आपका प्यार भी सच्चा है। कोई बात नहीं।'

युवती ने मजदूरिन की बांह पकड़ी और गाड़ी के पास ले गई। गाड़ी की पिछली खिड़की खोली। वहां एक दूसरी सजी-धजी, लड़की बैठी थी।

डॉ॰ पूरन सिंह

जन्म : 10 जुलाई, 1964 (मैनपुरी. उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : एम. ए. (अंग्रेजी-हिन्दी) 'सत्तरोत्तरी हिन्दी कहानियों में नारी' विषय पर पी.एच.डी

.कृतियां : लगभग सभी छोटी, बड़ी और स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां, लघुकथाएं, कविताएं, लेख आदि प्रकाशित।

पुरस्कार/सम्मान : विभिन्न प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मान और पुरस्कार।

हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा कहानी नरेशा की अम्मा उर्फ भजोरिया पर श्रीराम सेंटर दिल्ली में नाट्य मंचन का आयोजन

प्रकाशन : 9 कहानी संग्रह-पथराई आंखों के सपने, साजिश, मजबूर, पिंजड़ा, हवा का रुख, हरे कांच की चूड़ियाँ, स्त्री, रिश्ते और द से दलित तथा 11 लघुकथा संग्रह - महावर, वचन, सुराही, दिदिया, इंतजार,100 लघुकथाओं का संग्रह, मन, 64 दलित लघुकथाएं, दाग, मीत सब झूठे पड़ गए तथा लघुकथा शतक एवं 3 कविता संग्रह – विद्रोह, अस्तित्व और भूख एवं सत्तरोत्तरी हिन्दी कहानियों में नारी शोध ग्रंथ प्रकाशित।

कविता संग्रह-वृंदा तथा कहानी संग्रह-18 कहानियां 18 कहानीकार एवं नैतिक वर्जनाओं की कहानियाँ तथा व्यथा का संपादन।

एक कहानी संग्रह एक कविता संग्रह और एक लघुकथा संग्रह प्रकाशनाधीन।

विभिन्न रचनाएँ पुरस्कृत एवं आकाशवाणी से प्रसारण

लघुकथाओं, कहानियों और कविताओं आदि में निरंतर लेखन

उड़िया/मराठी/पंजाबी/बंगला/उर्दू/अंग्रेजी आदि में विभिन्न रचनाओं का अनुवाद प्रकाशित।

संप्रति : भारत सरकार में संयुक्त निदेशक के पद से सेवानिवृत अब स्वतंत्र लेखन।

संपर्क : 240 एवं 935डी बाबा फरीदपुरी, वेस्ट पटेल नगर,नई दिल्ली-110008 फोन : 9868846388